पाठ्यपुस्तक को कक्षा में कैसे उपयोग किया जाए?

केवलानंद काण्डपाल*

भारत में विद्यालयी व्यवस्था के विवेचनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यह एक प्रकार की कठोर व्यवस्था के अंतर्गत संचालित हो रही है। यह इस प्रकार की शिक्षा उपलब्ध करा रही है जिसमें पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को विकसित करने की पद्धतियाँ परीक्षा प्रणाली के पैटर्न और आवश्यकताओं पर आधारित हैं न कि शिक्षा के लक्ष्य, अधिगम की आवश्यकताओं एवं बच्चे के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवेश जैसी मिली-जुली कसौटियों पर। पाठ्यचर्या को अति सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया जाए तो कहा जा सकता है कि 'पाठ्यचर्या शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने की एक योजना है, जिसमें शैक्षिक उद्देश्यों के अनुसार अधिगमकर्ता की दृष्टि से प्राप्य ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्यात्मक मूल्यों का विवरण दिया गया होता है। इसके साथ-साथ इसमें पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री, शिक्षण विधियों एवं मूल्यांकन के तौर-तरीकों के बारे में स्पष्ट निर्देश समाहित होते हैं।' पाठ्यक्रम यह बताता है कि विषय-वस्तु के हिसाब से क्या पढ़ाया जाए और किस विशिष्ट उद्देश्यों के मद्देनज़र किस तरह के ज्ञान, कौशल और अभिवृत्तियों को खास बढ़ावा मिले। पाठ्यपुस्तक बच्चे के अनुभवों को व्यवस्थित ज्ञान में बदलने का एक साधन है, इसमें बच्चे एवं उसकी कक्षा के स्तर के अनुरूप विषय सामग्री एवं गतिविधियों को मनोवैज्ञानिक स्तर एवं शिक्षणशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है। वर्तमान परिदृश्य में न चाहते हुए भी पाठ्यपुस्तकों ने हमारी शिक्षा प्रणाली में केंद्रीय स्थान प्राप्त कर लिया है। अतः अध्यापक के लिए पाठ्यपुस्तक को इस तरह से उपयोग में लाना आवश्यक है कि विषय की पाठ्यचर्या के अधिकतम संभव उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके, इसी दृष्टि के आधार पर इस लेख में यह बताने का प्रयास किया गया है कि कक्षा 6 में सामाजिक विज्ञान विषय की एक पाठ्यपुस्तक 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-1' को कक्षा में कैसे उपयोग किया जाए।

वस्तुतः "पाठ्यचर्या शैक्षिक उद्देश्यों को क्रियान्वित करने की योजना है।" पाठ्यचर्या बच्चे के सीखने को सुगम बनाने की एक योजना है, जिसमें पाठ्यपुस्तकों की अहम भूमिका होती है। पाठ्यपुस्तक बच्चों के अनुभवों को समाहित करके ज्ञान को व्यवस्थित करने में एक साधन के रूप में योगदान देती है। पाठ्यचर्या के द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है कि प्रत्येक विषय के संदर्भ में बच्चे के ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों/अभिवृत्ति के आधार पर निम्न बदलाव हों—

1. विषय की विषय-सामग्री का उपयोग करते हुए बच्चे की अवधारणात्मक एवं प्रक्रियात्मक समझ पुख्ता हो अर्थात् अधिगमकर्ता अपने अनुभवों का उपयोग करते हुए अपनी समझ विकसित करें और अपने लिए अर्थ निर्मित करें, तथा ज्ञान का निर्माण करें।

* *प्रधानाध्यापक*, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पुड्कुनी (कपकोट), जनपद-बागेश्वर, उत्तराखंड 263642

2. बच्चे में विषय से संबंधित कौशलों का विकास हो तथा इन कौशलों का उपयोग बच्चा अपने दैनिक जीवन में कर सके।
3. विषय से संबंधित मूल्यों एवं अभिवृत्तियों का बच्चे में बीजारोपण हो तथा ये उसके व्यवहार में परिलक्षित हों।

यदि किसी विषय की पाठ्यचर्या बच्चे में उपरोक्त बदलाव की अपेक्षा करती है तो इसके लिए पाठ्यपुस्तक के शिक्षण के अलावा भी बहुत कुछ किए जाने की आवश्यकता होगी, जैसे— बच्चों के अनुभवों को ज्ञान में व्यवस्थित करना होगा, कुछ प्रयोग, अवलोकन, सर्वेक्षण, निरीक्षण करने होंगे, चर्चा, बातचीत, विचारों का आदान-प्रदान करना होगा आदि-आदि। इसका अर्थ यह है कि एक पाठ्यपुस्तक से बाहर निकलकर भी बहुत कुछ करने की ज़रूरत होगी। संभव है कि ऐसी कुछ गतिविधियाँ पाठ्यपुस्तक में दी भी गई हों, यदि नहीं भी दी गई हैं तो विषय अध्यापक को इसका नियोजन करने की ज़रूरत हमेशा बनी रहेगी। वस्तुतः विषय शिक्षण के क्रम में बच्चे के व्यवहार में अपेक्षित बदलाव लाने की दृष्टि से बच्चे के ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों/अभिवृत्ति में बदलाव लाना है। निश्चित रूप से इसके लिए मूल्यांकन की प्रक्रियाओं में बदलाव करने की ज़रूरत होगी। वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली की विसंगति पर कृष्ण कुमार (2002) ने बहुत ही अर्थपूर्ण बात कही है, "परीक्षा की पूंछ पाठ्यक्रम का शरीर हिला रही है।" इस कथन के गंभीर निहितार्थ हैं और यह इस बात का संकेत देती है कि विद्यालयों में पाठ्यक्रम इस तरह से पढ़ाया जाता है कि बच्चे परीक्षा में पास हो सकें, अच्छे अंक ला सकें। इसके लिए पाठ्यपुस्तक की विषय सामग्री को इस तरह से बार-बार रटाया जाता है कि बच्चे परीक्षा में बिलकुल वैसा ही लिख दें, जैसा कि पाठ्यपुस्तक में दिया गया है। इस प्रकार से पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम से महत्वपूर्ण परीक्षा हो जाती है और इस परीक्षा के चक्रव्यूह से निकालने में पाठ्यपुस्तक रक्षा कवच बन जाती है। 'पाठ्यपुस्तकों की समस्यात्मक भूमिका औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था से प्रारंभ होकर आज तक जारी है। वर्तमान में पाठ्यपुस्तकों ने विद्यालय एवं कक्षाओं में एक अति पवित्र एवं सम्मानजनक स्थान बना लिया है और पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम की भूमिका को दरकिनार कर दिया है।'

अधिकांशतः शिक्षिका/शिक्षक के पास कक्षा-कक्ष में किसी विषय को पढ़ाने के लिए केवल एक ही साधन होता है और वह है पाठ्यपुस्तक। ऐसे में पाठ्यपुस्तक, पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का एक मूर्त रूप बन जाती है। अब जितना भी हो सके इस पाठ्यपुस्तक को ही पढ़ाया जाना है, इससे इतर जो भी है वह अपाठ्य है, अनुपयोगी है। पाठ्यपुस्तक को उपयोग करने का यह तरीका एक ऐसी कक्षा प्रणाली स्थापित करती है, जिसमें पाठ्यपुस्तक को पूरा करना होता है, पाठ्यपुस्तक के कुछ खास हिस्सों को बार-बार बच्चों को पढ़ाकर याद कराया जाता है और पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर को पाठ में दी गई सामाग्री से हूबहू लिखने का अभ्यास कराया जाता है, मूल्यांकन की एक विशेष व्यवस्था के कारण यह तरीका परीक्षा प्रणाली की संगति में फ़िट बैठता है। इस प्रकार से पाठ्यपुस्तकें कक्षा में पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या को दरकिनार करके प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त कर लेती हैं। पाठ्यपुस्तक को इस नज़रिये से देखने की प्रवृत्ति चिंताजनक है। 'एकमात्र पाठ्यपुस्तक को

© NCERT not to be republished

ही पाठ्यचर्या से जुड़ी सभी ज़रूरतों का प्रतीक मान लिया जाता है। विषय की पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एकमात्र पाठ्यपुस्तक ही प्रयोग में लाई जाती है। बच्चे की सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं और विविधता पर ध्यान नहीं दिया जाता है।' वर्तमान में देश के लगभग सभी स्कूलों में कक्षाओं की कार्य शैली एवं प्रक्रियाएँ पूरी तरह से पाठ्यपुस्तकों पर निर्भर करती हैं, इसके परिणाम में विद्यालय की पाठ्यचर्या में पाठ्यपुस्तकों के महत्व का दायरा बढ़ना अपरिहार्य है।

वर्तमान परिदृश्य में पाठ्यपुस्तक की केंद्रीयता का विश्लेषण लेख के इस शुरुआती हिस्से में प्रासंगिक है। हमारे न चाहते हुए भी यह स्थिति तब तक बनी रहेगी, जब तक की परीक्षा प्रणाली में ज़रूरी बदलाव नहीं होते। अब हम शिक्षकों पर निर्भर हैं कि 'पाठ्यपुस्तक की केंद्रीयता' की अनैच्छिक स्थिति में कम-से-कम पाठ्यपुस्तकों को कक्षा-कक्ष में इस प्रकार से उपयोग में लाएँ, जिससे बच्चे के ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों व अभिवृत्ति में अधिकतम संभव बदलाव लाया जा सके।

अब हम अपने मूल विषय पर आ सकते हैं। सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत समाज के विविध सरोकार शामिल होते हैं। इस विषय की अंतर्वस्तु में इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मानवशास्त्र जैसी विषय-वस्तु शामिल की जाती है। सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या का लक्ष्य सामाजिक सच्चाई की समीक्षात्मक जाँच-पड़ताल और उस पर प्रश्न करते हुए विद्यार्थियों में विवेचनात्मक जागरूकता का संवर्धन करना है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* इस बात पर ज़ोर देती है कि सामाजिक विज्ञान की अनुभूतियाँ एवं ज्ञान, एक समतामूलक और शांतिमूलक समाज का ज्ञान आधार करने की दिशा में अपरिहार्य हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय से अपेक्षा की जाती है कि स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर सम्मान और विविधता के प्रति आदर जैसे मानवीय मूल्यों का सुदृढ़ आधार तैयार करने का दायित्व निर्वहन करे। इस स्तर पर सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का लक्ष्य विद्यार्थियों में मानसिक, तार्किक और नैतिक क्षमता का विकास होना चाहिए, जिससे वे अपने कार्यशील जीवन में उन सामाजिक शक्तियों से सावधान रह सकें जो इन मूल्यों के लिए खतरा साबित हो सकती हैं।

उत्तराखण्ड के विद्यालयों में वर्ष 2018 से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों को लागू करने का निर्णय लिया गया। राज्य के विद्यालयों में कक्षा 6 में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित निम्न तीन पाठ्यपुस्तकें लागू की गई हैं—

1. *हमारा अतीत* (इतिहास की पाठ्यपुस्तक)
2. *पृथ्वी हमारा आवास* (भूगोल की पाठ्यपुस्तक)
3. *सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन* – 1 (राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक)

उत्तराखण्ड के विद्यालयों में कक्षा 6 में पहली बार सामाजिक विज्ञान विषय को अलग से एक विषय के रूप में पढ़ाने की शुरुआत होती है। इससे पहले कक्षा 3 से कक्षा 5 तक *हमारे आस-पास* के रूप में विषय पढ़ाया जाता है, जिसमें हमारे आस-पास के विज्ञान, भूगोल एवं सामाजिक-राजनीतिक जीवन को जानने-समझने पर ज़ोर दिया जाता है। अतः सभी विषयों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण की विधियाँ भी इस तरह से मिली-जुली होती हैं कि विज्ञान, भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान एवं समाजशास्त्र जैसे

विषयों के अनुकूल हों। कक्षा 6 में विज्ञान विषय अलग से पढ़ाया जाता है। सामाजिक विज्ञान विषय की प्रकृति विज्ञान विषय की तरह विशुद्ध रूप से प्रायोगिक नहीं होती तथापि सामाजिक विज्ञान विषय की प्रयोगशाला बच्चे के आस-पास का समाज होती है। इस प्रयोगशाला में सामाजिक विज्ञान विषय की विभिन्न अवधारणाओं, सिद्धांतों, अभिलक्षणों की जाँच-पड़ताल करते हुए विद्यार्थी अपनी समझ विकसित करते हैं, अर्थ निर्मित करते हैं, ज्ञान का निर्माण करते हैं और इसको वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में लागू करने का हुनर प्राप्त करते हैं।

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की विषय-वस्तु क्या होनी चाहिए? इस बारे में भी *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* स्पष्टता से संकेत करती है कि 'उच्च प्राथमिक स्तर पर, सामाजिक विज्ञान की विषय-वस्तु इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र से मिलती है। इतिहास में भारत के अलग-अलग हिस्सों में होने वाले विकास पर ध्यान दिया जाए, जिसमें विश्व के अन्य भागों में हो रहे विकास के खंड भी हों। भूगोल में पर्यावरण, संसाधन तथा स्थानीय से वैश्विक स्तर पर विभिन्न स्तरों के विकास के बीच संतुलन बिठाने का प्रयास किया जा सकता है। राजनीति विज्ञान में विद्यार्थियों का परिचय स्थानीय राज्य और केंद्रीय स्तर पर सरकार के गठन और उनके कार्यों और सहभागिता की प्रजातांत्रिक प्रक्रियाओं से कराया जाए। अर्थशास्त्र विद्यार्थियों को आर्थिक संस्थानों, जैसे— परिवार, बाज़ार और राज्य की समझ प्रदान करने पर केंद्रित हो।'

प्रस्तुत लेख में विवेचित कक्षा 6 में सामाजिक विज्ञान विषय की एक पाठ्यपुस्तक *सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन–1* के संदर्भ में यह जानने-समझने की कोशिश की गई है कि इस पुस्तक को कक्षा में पढ़ाने के लिए क्या विशेष नज़रिया अपनाया जाए। उत्तराखण्ड में शिक्षा सत्र 2018–19 से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों को लागू करने का शासकीय निर्णय लिया गया। इसके प्रभावों का अध्ययन करना इस लेख का मंतव्य भी नहीं है, परंतु इस शुरुआती दौर पर भी इस विषय में काम कर रहे शिक्षकों की चिंताएँ एवं सरोकार सामने आने लगे हैं, अतः यह ज़रूरी हो जाता है कि इसी आलोक में यह जाँच-पड़ताल की जाए कि इस पुस्तक को कक्षा-कक्ष में उपयोग करने का नज़रिया क्या हो? लेखक के विद्यालय के सामाजिक विज्ञान विषय के अध्यापक की चिंता है कि, 'इस पुस्तक में तो प्रश्न बहुत कम हैं, गतिविधियाँ ही गतिविधियाँ हैं, आखिर विद्यार्थी परीक्षाओं में क्या लिखेंगे? (इस विषय में काम कर रहे अध्यापकों से, जिनसे लेखक की इस विषय में बातचीत होती रहती है, के सरोकार भी कुछ इसी तरह के या मिलते-जुलते थे)। अतः यह उचित जान पड़ता है कि शिक्षणशास्त्रीय नज़रिए से इस पर विमर्श किया जाए।

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन–1 पाठ्यपुस्तक मुख्यतः चार विषय-क्षेत्रों पर विकसित की गई है, जिन्हें पुस्तक में इकाई कहा गया है, ये विषय-क्षेत्र निम्नवत हैं—

- विविधता
- सरकार
- स्थानीय सरकार एवं प्रशासन
- आजीविकाएँ

चारों विषय-क्षेत्रों (इकाईयों) में सम्मिलित नौ अध्याय एवं पाठ्यवस्तु का निरूपण तालिका 1 में दिया गया है।

© NCERT not to be republished

तालिका 1 — इकाई/विषय-क्षेत्र अध्याय एवं उनके शीर्षकों तथा विषय-वस्तु का विवरण

इकाई/विषय	अध्याय	अध्याय का शीर्षक	विषय-वस्तु
1. विविधता	अध्याय 1	विविधता की समझ	• अवधारणा • विविधता हमारे जीवन को कैसे समृद्ध करती है? • भारत में विविधता • हम विविधता को कैसे समझें? • विविधता में एकता
	अध्याय 2	विविधता एवं भेदभाव	• पूर्वाग्रह • लड़के एवं लड़की में भेदभाव • रूढ़िबद्ध धारणाएँ बनाना • असमानता एवं भेदभाव • भेदभाव का सामना • समानता के लिए संघर्ष
2. सरकार	अध्याय 3	सरकार क्या है?	• सरकार के स्तर • सरकार एवं कानून • सरकार के प्रकार • लोकतांत्रिक सरकार
	अध्याय 4	लोकतांत्रिक सरकार के मुख्य तत्व	• भागीधारी की अवधारणा • भागीदारी के अन्य तरीके • समानता एवं न्याय
3. स्थानीय सरकार एवं प्रशासन	अध्याय 5	पंचायती राज	• ग्राम सभा • ग्राम पंचायत • पंचायत के तीन स्तर
	अध्याय 6	गाँव का प्रशासन	• गाँव में झगड़ा • पुलिस थाने का क्षेत्र • पुलिस थाने में होने वाले काम • राजस्व विभाग का काम • एक नया कानून (हिन्दू अधिनियम धारा, 2005) • अन्य सार्वजनिक सेवाएँ— राशन की दुकान, स्वास्थ्य केंद्र, दुग्ध उत्पादक समितियाँ
	अध्याय 7	नगर प्रशासन	• निगम पार्षद एवं प्रशासनिक कर्मचारी

© NCERT not to be republished

4. आजीविकाएँ	अध्याय 8	ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका	• तमिलनाडु का एक गाँव-कल्लापट्टू • भारत के खेतिहर मज़दूर एवं किसान • नागालैंड की सीढ़ीनुमा खेती • ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका के साधन
	अध्याय 9	शहरी क्षेत्र में आजीविका	• सड़कों पर काम करना (सड़क किनारे दुकाने, रेहड़ी आदि), बाज़ार में, बड़ी दुकानों में, फैक्ट्री में, दफ़्तर में काम करना • बुढ़ापे के लिए बचत • छुट्टियाँ (दफ़्तरों की छुट्टियाँ, राष्ट्रीय त्यौहार, रविवार) • परिवार के लिए विभिन्न सुविधाएँ

पाठ्यपुस्तक को कक्षा-कक्ष में किस तरह उपयोग करें— मूलभूत प्रश्न यह है कि पाठ्यपुस्तक एक साधन है, जिसके माध्यम से विषय की पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने की कोशिश की जाती है (पाठ्यपुस्तक के अलावा भी अनेक साधनों के उपयोग की ज़रूरत हमेशा बनी रहती है)। पाठ्यपुस्तक के आमुख में इस पुस्तक को किस प्रकार से उपयोग में लाया जाए, इसका संकेत दिया गया है, "इस प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं।...शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है।"

इसी पुस्तक में 'किताब का इस्तेमाल कैसे करें' के अंतर्गत इस पुस्तक को कक्षा-कक्ष में उपयोग में लाने के बारे में महत्वपूर्ण सूत्र दिए गए हैं—

1. बच्चे ठोस अनुभवों के माध्यम से अच्छी तरह से सीखते हैं, अतः संस्थाओं और प्रक्रियाओं पर काल्पनिक वृत्तांतों, केस स्टडी या बच्चों के अनुभवों से जुड़े अभ्यासों के आधार पर चर्चा की जाए।
2. अवधारणाओं का इस तरह से बच्चों से परिचय कराया जाए कि उनकी समझ बन सके, बच्चे तथ्यों एवं सूचनाओं तक सीमित न रहें। अतः पुस्तक में परिभाषाएँ, सूचनाओं और तथ्यों को कम-से-कम परोसने का प्रयास है और विषय शिक्षक को कक्षा-कक्ष में इस बात का हमेशा ध्यान रखने की ज़रूरत है।
3. कक्षा-कक्ष में बच्चों के अनुभवों को शामिल करने, उनकी जाँच-पड़ताल करने, चुनौती प्रस्तुत करने की ज़रूरत होगी, जिससे यथार्थ से उन आदर्शों की ओर बढ़ा जा सके जो संविधान में निहित मूल्यों की संगति में हैं।
   - **पाठ की शुरुआत**— प्रत्येक पाठ की शुरुआत दो तत्वों से होती है। पहला, परिचयात्मक भाग, जो पूरे पाठ की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत करता है कि पाठ

© NCERT not to be republished

में किन-किन मुख्य बिंदुओं पर चर्चा की जाएगी। इस भाग में बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाने के साथ-साथ उनके अनुभवों को कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में जोड़ने की ज़रूरत होगी। यह प्रयास ज्ञान सृजन के शिक्षणशास्त्र के लिए निहायत ज़रूरी भी है। प्रत्येक पाठ के शुरू में एक बड़ा चित्र दिया गया है और इसका एक खास मंतव्य भी है कि इससे बच्चों को इस बात का अनुमान लगाने के मौके दिए जाएँ कि पाठ किस बारे में है? यहाँ यह भी कहना समीचीन है कि विषय शिक्षक को पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्रों एवं प्रश्नों के अलावा भी आवश्यकतानुसार अपने प्रश्न एवं चित्रों का इस्तेमाल करने की आवश्यकता होगी।

- **पाठ के बीच में प्रश्न और अभ्यास**—पाठ के बीच में रंगीन खानों में चर्चा के लिए कुछ मुद्दे, कुछ प्रश्न और कुछ अभ्यास दिए गए हैं। इसका मंतव्य है कि शिक्षक यह अंदाज़ा लगा पाएँ कि विद्यार्थियों ने पाठ में चर्चित मुद्दों को कितना समझा? विद्यार्थियों ने अपने अनुभवों के आलोक में इन मुद्दों में निहित अवधारणाओं को कितना समझा? विद्यार्थी अभी तक पढ़े एवं समझे हुए पाठ का उपयोग अपनी चर्चा में किस तरह से करते हैं? ज्ञान सृजन के शिक्षणशास्त्र में यह भी ज़रूरी है कि सीखने-सिखाने के दौरान विद्यार्थी का सतत मूल्यांकन भी होता रहे। यह अभ्यास इस उद्देश्य की बहुत हद तक पूर्ति करते हैं। यहाँ यह भी उल्लेख करना ज़रूरी है कि चर्चा प्रश्न एवं मुद्दों को विद्यार्थी के संदर्भ में बदलने की ज़रूरत हमेशा रहेगी।
- **अभ्यास**— परंपरागत शिक्षणशास्त्र में पाठ के अंत में प्रश्नों के माध्यम से बच्चे की समझ का आकलन करने पर ज़ोर दिया जाता रहा है, परंतु इस पाठ्यपुस्तक में पाठ के अंत में अभ्यास दिए गए हैं, जिसमें विद्यार्थी की समझ एवं इस समझ के अनुप्रयोग का आकलन करना मुख्य उद्देश्य है। यदि विद्यार्थी पाठ में वर्णित एवं चर्चित मुद्दों एवं अवधारणाओं को ठीक से समझ पा रहा है तो निश्चित रूप से परीक्षा में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख पाने में समर्थ हो सकेगा और उसे किसी विशेष प्रश्न के उत्तर रटने की आवश्यकता भी नहीं रहेगी। इसके लिए ज़रूरी है कि परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रकृति में भी आमूलचूल बदलाव लाए जाएँ।
- **कथानकों का उपयोग**— इस पुस्तक में बहुत से काल्पनिक एवं यथार्थ कथानकों का उपयोग किया गया है। इनका उपयोग विद्यार्थियों में चर्चा को आगे बढ़ाने और अंतर्दृष्टि विकसित करने के लिए किया गया है। इससे विद्यार्थी स्वयं को कथानक से जोड़ सकेंगे। कुछ पाठों में विद्यार्थियों से अपने अनुभवों पर कथानक लिखने के लिए भी कहा गया है। ऐसा करने से विद्यार्थी की पाठ्य विषय की अवधारणात्मक समझ पुख्ता होगी। शिक्षकों को बच्चे के संदर्भ से जुड़े ऐसे काल्पनिक या यथार्थ कथानक तैयार करने की ज़रूरत भी होगी।
- **छवियों का उपयोग**—पुस्तक में कई चित्र एवं तस्वीरें हैं। ये चित्र एवं छवियाँ पाठ्य विषय-वस्तु का अभिन्न अंग हैं और विषय

© NCERT not to be republished

सामग्री को समझने के लिए इनका उपयोग करना होगा। इन पर चर्चा करने से बच्चों को ऐसी परिस्थितियों की कल्पना करने में मदद मिलेगी जिनसे वे परिचित नहीं हैं। इसके अलावा भी पुस्तकालय, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं और इंटरनेट में संदर्भ के अनुकूल चित्रों एवं छवियों को इस्तेमाल करने के लिए विषय अध्यापक को अतिरिक्त प्रयास करने होंगे।

- **भाषा में जेंडर संवेदनशीलता**—पुस्तक की सबसे सकारात्मक बात यह है कि पाठों में केवल स्त्रीलिंग रूपों एवं संबोधनों का इस्तेमाल किया गया है। यह भाषा के परंपरागत रूपों में बदलाव की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इसका मकसद लड़कों या पुरुषों को पाठ्यपुस्तक से दरकिनार करना नहीं है, वरन् लड़कियों को किताबों में जगह देना है जो हमारी भाषा एवं कार्यक्षेत्र से एक तरह से बाहर की जाती रही हैं। यह भी सच है कि महज़ इस प्रयास से यह बराबरी नहीं आ सकेगी, इसके लिए अध्यापक को कक्षा-कक्ष में निरंतर सजग एवं संवेदनशील बने रहना होगा—अपनी भाषा में, व्यवहार में और अंतःक्रिया में।
- **अन्य साधनों का उपयोग**—*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* इस बात को बहुत ही सशक्त तरीके से रेखांकित करती है कि पाठ्यपुस्तक महत्वपूर्ण है, लेकिन कक्षा में उपयोग में लाए जाने वाले कई साधनों में से एक साधन है। विषय अध्यापक को अन्य साधनों की तलाश करनी होगी और उन्हें जुटाना होगा तथा संदर्भ के अनुकूल उन्हें पुनर्व्यवस्थित करना होगा। पाठ्यपुस्तक से बाहर समाचार-पत्र, कार्टून, पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करना होगा। हमारे सरकारी स्कूलों के बच्चे इस मामले में बहुत ही दयनीय स्थिति में हैं, उनकी पहुँच इन साधनों तक नहीं है और न ही उनकी सामर्थ्य में है। अतः विषय अध्यापक को इस कमी को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। पाठ्यपुस्तक की केंद्रीयता एवं अति पवित्रता की धारणा को तोड़ने के लिए यह बहुत उपयोगी उपक्रम होगा।

समेकन

इस प्रकार से पुस्तक चार विषय-क्षेत्रों एवं नौ अध्यायों में प्रस्तुत है। अध्याय एवं इनमें समाहित पाठ्यवस्तु चक्रीय (स्पाइरल) बुनी गई हैं। प्रत्येक विषय-क्षेत्र में पहले अवधारणात्मक समझ को विकसित करने का मंतव्य है, इसके बाद विषय-क्षेत्र से संबंधित मुद्दों को लिया गया है और इस पर विचार-विमर्श, चर्चा एवं गतिविधियाँ सुझाई गई हैं। गतिविधियों को बच्चे के स्थानीय संदर्भ में बदलने की आवश्यकता होगी और ऐसी स्वायत्तता शिक्षक को लेनी होगी। उदाहरण के लिए, अध्याय 6 में पुलिस थाने का क्षेत्र एवं इनमें होने वाला काम। यदि बच्चा ग्रामीण क्षेत्र का निवासी है और वह क्षेत्र पुलिस थाना क्षेत्र में नहीं आता, वरन् पटवारी क्षेत्र में आता है तो पटवारी क्षेत्र एवं इनमें होने वाले काम को पाठ्यवस्तु बनाया जाना चाहिए। इसी प्रकार से अध्याय 6 में विद्यार्थी के क्षेत्र में उपलब्ध सार्वजनिक सेवाओं में (यदि पुस्तक में वर्णित सेवाएँ

© NCERT not to be republished

उस क्षेत्र विशेष में उपलब्ध न हों) आगनबाड़ी केंद्र, ए.एन.एम. सेंटर (ऑक्ज़िलरी नर्सिंग मिडवाइफ़री सेंटर) के सर्वेक्षण को शामिल किया जा सकता है।

पाठ्यपुस्तक में लगभग हर अध्याय में अभ्यास के अंतर्गत गतिविधियाँ दी गई हैं। जिससे बच्चों को पाठ्य विषय में प्रस्तुत की गई अवधारणाओं को समझने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए—

- अध्याय 2 रूढ़ीबद्ध धारणाओं को चिह्नित करना और उनको चुनौती देना;
- अध्याय 3 सरकार किस तरह से जीवन को प्रभावित करती है, इसकी सूची बनाना;
- अध्याय 4 विभिन्न विवादों एवं मुद्दों को सुलझाने के लिए सरकार की ज़रूरत पर चर्चा;
- अध्याय 5 अपने क्षेत्र या अपने पास के ग्रामीण क्षेत्र में पंचायत द्वारा किए गए किसी काम के बारे में यह पता लगाना कि यह काम क्यों किया गया? धनराशि कहाँ से आई? काम पूरा हुआ या नहीं?
- अध्याय 6 पुलिस थाने में जाकर उसके काम एवं भूमिका को समझना (विद्यार्थी के संदर्भ विशेष में यह पटवारी चौकी भी हो सकती है);
- अध्याय 7 स्वच्छ भारत अभियान के तरीकों का अवलोकन, पोस्टर तैयार करना और विद्यालय में इसकी प्रदर्शनी लगाना;
- अध्याय 8 में दी गई केस स्टडी के अनुसार शेखर एवं रामलिंगम की स्थितियों की तुलना करना (विद्यार्थी के संदर्भ से जुड़ी केस स्टडी भी उपयोग में लाई जा सकती है); और
- अध्याय 9 शहर के संदर्भ में विभिन्न काम एवं आमदनी वाले परिवारों की स्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन (बच्चे के संदर्भ के अनुकूल ग्रामीण क्षेत्र के लिए इस प्रकार का अभ्यास कराया जा सकता है)।

इन अभ्यासों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये अभ्यास विद्यार्थी को पाठ्य विषय की अवधारणात्मक समझ एवं उसके अपने जीवन में उपयोग के कौशल को विकसित करने की दृष्टि से बहुत ही ज़रूरी हैं। इसके साथ-साथ अध्यापक को पाठ्यपुस्तक से भी बाहर निकलने की ज़रूरत को रेखांकित करते हैं। इस लेख के शुरुआती हिस्से में उल्लेख किया गया है कि सामाजिक विज्ञान की प्रयोगशाला विद्यार्थी का तात्कालिक परिवेश/समाज है, जहाँ विद्यार्थी अवलोकन, चर्चा, बातचीत, साक्षात्कार, सर्वेक्षण आदि के माध्यम से पाठ्यपुस्तक में दिए गए तथ्यों, विचारों एवं सिद्धांतों का परीक्षण करके अपनी समझ को विकसित करता है।

अध्यापक पाठ्यपुस्तक से हटकर भी सोच सकें, इसके लिए दो बातें महत्वपूर्ण हैं। पहला, इस बात की स्पष्ट समझ कि पाठ्यपुस्तक केवल एक सुविधाजनक साधन है, जिसमें बच्चों से क्या-क्या सीखने की अपेक्षाएँ हैं, उन बातों से संबंधित विषय सामग्री का व्यवस्थित तरीके से एकत्रीकरण किया गया है और यह अनन्तिम भी नहीं है। बहुत बार इससे अलग हटकर भी अध्यापक को सामग्री एकत्रित करनी पड़ेगी, जुटानी पड़ेगी और विकसित करनी पड़ेगी। दूसरा, अध्यापक को इस बारे में निरंतर सचेत रहना होगा की विषय की पाठ्यचर्या के लक्ष्य क्या हैं? पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक में क्या संकल्पनात्मक अंतर है? शिक्षक की इस बारे में समझ से बच्चों के अनुभवों को कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में शामिल होने की संभावनाएँ बलवती होती हैं।

© NCERT not to be republished

इस प्रकार से पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के अनुभवों को ज्ञान में व्यवस्थित करने का साधन बन जाती हैं और विद्यार्थियों की ज्ञान निर्माण प्रक्रिया में मदद कर सकती हैं। ज़रूरी नहीं कि पाठ्यपुस्तक पूरे वर्ष पढ़ाई जाए और इसलिए भी ज़रूरी नहीं कि उसमें पूरा पाठ्यक्रम हो। कोई भी अच्छी पाठ्यपुस्तक बच्चे के वातावरण की अन्य लोगों और सहपाठियों के साथ अंतःक्रिया करवाने वाली होनी चाहिए। वह एक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करे जिससे बच्चा सक्रिय रूप से पाठ, विचारों, वस्तुओं, वातावरण और लोगों से अपने को जोड़ते हुए अपनी समझ का निर्माण कर सके। यह ऐसी न हो जो ज्ञान को अंतिम उत्पाद के रूप में बच्चों के दिमाग में भरने का काम करे।

आज देश के अधिकतर विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकें कक्षा में हावी हैं। शैक्षिक नियोजन के कक्षा में पहुँचते-पहुँचते पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम के लचीले होने की सारी संभावनाएँ तथा शिक्षक की आज़ादी की संभावनाएँ कहीं गुम हो जाती हैं। शिक्षक को या तो अयोग्य या निरुत्साहित समझा जाता है या फिर दोनों, विद्यालय को अधिगम सामग्री रहित समझा जाने लगता है और यह समझा जाने लगता है कि वातावरण बच्चों के अधिगम में किसी काम का नहीं। पाठ्यपुस्तकें इन सभी कठिनाइयों का एकमात्र हल समझी जाती हैं। वह सारा ज्ञान जो कक्षा में बच्चे से ग्रहण करने की उम्मीद की जाती है, इसमें एकत्र किया जाता है एवं इस ज्ञान को नियोजित किया जाता है, ताकि बच्चे को इस ज्ञान के अतिरिक्त कहीं और देखने की ज़रूरत न पढ़े। इस कारण "पाठ्यपुस्तक को पढ़ाना, पर्याप्त शिक्षा माना जाता है। इस ज़रूरत से ज़्यादा महत्व के कारण पाठ्यपुस्तक ने एक गौरवशाली और मानक रूपरेखा को अपना लिया है।...पाठ्यपुस्तक प्रभुत्व का वह प्रतीक बन गयी है जिसे अवमानित करना कठिन है।"

निष्कर्ष

उक्त पाठ्यपुस्तक (कक्षा 6, *सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन – 1*) अपने उद्देश्य एवं भावना में बहुत स्पष्ट है, परंतु फिर वही यक्ष प्रश्न सामने खड़ा हो जाता है कि जब परीक्षा में अधिकांशतः प्रश्न इस तरह से पूछे जाते हैं जो बच्चे की याददाश्त का मूल्यांकन करते हैं, रटने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं, विद्यार्थी को अपनी समझ को अभिव्यक्त करने के अवसर नहीं देते हैं तो ऐसे में अध्यापक पुस्तक को एक विशेष तरह से उपयोग करने के लिए प्रेरित कैसे हो सकते हैं? अध्यापकों की यह चिंता कि 'पुस्तक में प्रश्न तो दिए ही नहीं गए हैं', वाजिब लगती है। इस वर्ष (2018–2019) की परीक्षा के अनुभव भी इस मामले में बहुत सुखद नहीं रहे हैं। परीक्षा में पूछे गए प्रश्न पाठ्यपुस्तक की मनसा के एकदम विपरीत थे और विद्यार्थियों को इसके उत्तर लिखने में अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा।

वास्तव में, परीक्षा प्रणाली में मूलभूत बदलाव करने की ज़रूरत है, लेकिन जब तक यह नहीं होता हम अध्यापक इतना तो कर ही सकते हैं कि पाठ्यपुस्तक को इस तरह से उपयोग में लाएँ, जिसमें विद्यार्थी को अपने अनुभवों को जाँचने-परखने के अवसर मिल सकें। विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक से बाहर निकलने के अवसर दें, विद्यार्थियों के लिए विषय की प्रयोगशाला (समाज) में अंतःक्रिया के अवसर निकालें और इस तरह से विभिन्न मुद्दों पर अवधारणात्मक समझ पुख्ता करने में मदद करें। यदि हम अध्यापक इतना करने में सफल हो जाते

© NCERT not to be republished

हैं तो विद्यार्थी परीक्षा में पूछे गए किसी भी प्रकार के प्रश्नों का जवाब लिखने में अवश्य सफल हो सकेंगे। एक विवेकशील एवं चिंतनशील नागरिक के लिए ज़रूरी कौशल भी प्राप्त कर सकेंगे और मुख्य रूप से यही इस विषय की पाठ्यचर्या का लक्ष्य है।

संदर्भ

कुमार, कृष्ण. 2002. *शिक्षा और ज्ञान*. ग्रन्थ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, लक्ष्मीनगर, दिल्ली 110092.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा. शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

——. 2006. *सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन –1*, कक्षा 6 के लिए पाठ्यपुस्तक. रा. शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

——. 2009. *पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें — राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र — 2006.* रा. शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished